

प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान जीवन, ग्रामीण गरीबी और शोषण का चित्रण

अरुणिमा सिंह¹ एवं डॉ. नीलम सिंह²

¹ शोधार्थी, हिंदी-विभाग

² सहायक प्रोफेसर, हिंदी-विभाग

विक्रान्त विश्वविद्यालय ग्वालियर

सारांश

हिंदी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद का स्थान ऐसे यथार्थवादी कथाकार के रूप में स्थापित है, जिन्होंने भारतीय समाज के उपेक्षित, निर्धन और शोषित वर्गों के जीवन को साहित्य के केंद्र में लाया। उनके उपन्यासों में किसान जीवन, ग्रामीण गरीबी, ऋणग्रस्तता, जमींदारी व्यवस्था, साहूकारी, जातिगत असमानता तथा सामाजिक रूढ़ियों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। प्रेमचंद के प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि और विशेष रूप से गोदान में ग्रामीण समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचना को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। गोदान का होरी भारतीय किसान के उस वर्ग का प्रतिनिधि है जो भूमि से गहरे जुड़ा होने के बावजूद निरंतर कर्ज, लगान, सामाजिक दबाव और आर्थिक अभाव से घिरा रहता है।

मुख्य संकेतक: किसान जीवन, ग्रामीण गरीबी, शोषण, गोदान, जमींदारी, साहूकारी, ग्रामीण समाज, ऋणग्रस्तता, सामाजिक असमानता।

परिचय

मुंशी प्रेमचंद हिंदी उपन्यास परंपरा के प्रमुख यथार्थवादी साहित्यकार हैं। उन्होंने भारतीय समाज के उन वर्गों को अपनी रचनाओं का विषय बनाया जिन्हें लंबे समय तक साहित्य में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला था। किसान, मजदूर, स्त्री, निम्नवर्ग और ग्रामीण समाज प्रेमचंद की रचनात्मक दृष्टि के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन केवल प्राकृतिक सौंदर्य या सरल जीवन के रूप में प्रस्तुत नहीं होता, बल्कि उसके भीतर मौजूद आर्थिक संघर्ष, वर्गीय असमानता, जातिगत विभाजन, ऋण, भूख, सामाजिक प्रतिष्ठा और शोषण की जटिल स्थितियाँ भी सामने आती हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान अपने खेत, पशु, परिवार और सामाजिक मर्यादा से जुड़ा हुआ दिखाई देता है, किंतु आर्थिक व्यवस्था उसे निरंतर संकट में डालती रहती है। 2021 में प्रकाशित IGNOU की अध्ययन सामग्री में भी प्रेमचंद

के गोदान को भारतीय किसान जीवन से गहरे रूप से जुड़ा उपन्यास माना गया है और होरी तथा धनिया को भारतीय किसान जीवन के प्रतिनिधि पात्रों के रूप में देखा गया है। इस प्रकार प्रेमचंद के किसान पात्र केवल किसी एक परिवार की कहानी नहीं हैं, बल्कि अपने समय के व्यापक ग्रामीण समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित किसान जीवन और ग्रामीण समाज की वास्तविक परिस्थितियों का विश्लेषण करना है। इसके अंतर्गत ग्रामीण गरीबी, किसान की ऋणग्रस्तता, जमींदारी एवं साहूकारी शोषण, सामाजिक असमानता तथा किसान परिवार की समस्याओं का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में आर्थिक शोषण को केवल व्यक्तिगत समस्या के रूप में प्रस्तुत किया है या उसके पीछे मौजूद व्यापक सामाजिक संरचना को भी रेखांकित किया है। अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य गोदान सहित अन्य उपन्यासों में किसान पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद की सामाजिक दृष्टि को समझना है।

अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों को प्राथमिक साहित्यिक स्रोत के रूप में तथा प्रेमचंद साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक एवं शैक्षणिक सामग्री को द्वितीयक स्रोत के रूप में उपयोग किया गया है। अध्ययन की संदर्भ-सीमा में 2010 से 2022 के बीच उपलब्ध साहित्यिक एवं शैक्षणिक सामग्री को प्राथमिकता दी गई है। IGNOU की 2017 की सामग्री में गोदान के किसान जीवन, भूमि-संबंध, किसान संघर्ष और शोषण को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है, जबकि 2021 की सामग्री में प्रेमचंद के उपन्यासों और उनके सामाजिक संदर्भों पर चर्चा की गई है। अध्ययन में पात्रों, कथानक, सामाजिक परिस्थितियों और आर्थिक संबंधों का पाठ-विश्लेषण किया गया है।

प्रेमचंद और किसान जीवन

प्रेमचंद के साहित्य में किसान केवल पृष्ठभूमि का पात्र नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना के केंद्र में उपस्थित मनुष्य है। भारतीय ग्रामीण समाज कृषि पर आधारित था, लेकिन किसान को अपनी उपज और श्रम का पूरा लाभ प्राप्त नहीं होता था। भूमि पर निर्भर किसान को लगान, ऋण, प्राकृतिक आपदा, सामाजिक दायित्व और पारिवारिक आवश्यकताओं का सामना करना पड़ता था। प्रेमचंद ने किसान की इसी बहुआयामी समस्या को अपने उपन्यासों में स्थान दिया। उनके साहित्य में किसान मेहनती और उत्पादनशील है, लेकिन आर्थिक रूप से असुरक्षित है। यही विरोधाभास प्रेमचंद के किसान जीवन चित्रण की विशेषता है। गोदान में होरी का जीवन इस स्थिति का सबसे प्रभावशाली उदाहरण है। वह

जमीन और खेती से जुड़ा रहना चाहता है, लेकिन आर्थिक परिस्थितियाँ उसे लगातार कर्ज और निर्भरता की ओर धकेलती हैं। IGNOU के अध्ययन में भी होरी को सीमांत किसान के रूप में प्रस्तुत करते हुए उसके जीवन को भारतीय किसान की व्यापक त्रासदी से जोड़ा गया है।

‘गोदान’ में किसान जीवन का यथार्थ

प्रेमचंद के किसान जीवन संबंधी चित्रण की चरम अभिव्यक्ति गोदान में दिखाई देती है। उपन्यास का प्रमुख पात्र होरी एक साधारण किसान है, जिसके लिए खेती केवल आर्थिक गतिविधि नहीं बल्कि उसके जीवन, सम्मान और पहचान का आधार है। वह गाय प्राप्त करने की इच्छा रखता है और सामाजिक प्रतिष्ठा तथा धार्मिक विश्वासों से गहराई से जुड़ा हुआ है। लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि छोटी-सी घटना भी उसे ऋण और संकट की ओर ले जाती है। होरी का जीवन बताता है कि किसान की वास्तविक समस्या केवल कम आय नहीं, बल्कि ऐसी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था है जिसमें उसकी आय का बड़ा हिस्सा विभिन्न प्रकार के भुगतान, ऋण और सामाजिक दायित्वों में समाप्त हो जाता है। 2017 की IGNOU सामग्री में भी यह उल्लेख मिलता है कि होरी जमीन बचाने के प्रयास में अपना सब कुछ खोता जाता है और जमींदार, साहूकार, अफसर, पटवारी तथा पुरोहित जैसी शक्तियाँ उसके संकट को बढ़ाती हैं।

ग्रामीण गरीबी का चित्रण

प्रेमचंद के उपन्यासों में ग्रामीण गरीबी केवल धन के अभाव तक सीमित नहीं है। इसमें भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा की कमी भी शामिल है। किसान के पास उत्पादन का साधन भूमि है, लेकिन भूमि का आकार छोटा होने तथा आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण वह स्थायी आर्थिक सुरक्षा प्राप्त नहीं कर पाता। प्राकृतिक संकट, फसल की असफलता और पारिवारिक आवश्यकताएँ उसकी स्थिति को और कठिन बना देती हैं। ऐसी परिस्थितियों में किसान साहूकार से ऋण लेने के लिए मजबूर होता है और धीरे-धीरे ऋण का चक्र उसके जीवन का स्थायी हिस्सा बन जाता है। प्रेमचंद ने ग्रामीण गरीबी को संवेदनात्मक रूप से प्रस्तुत करते हुए किसान के आत्मसम्मान और उसकी आर्थिक विवशता के बीच मौजूद तनाव को विशेष रूप से उभारा है। इस दृष्टि से उनका ग्रामीण यथार्थ केवल गरीबी का वर्णन नहीं बल्कि गरीबी पैदा करने वाली परिस्थितियों की पहचान भी करता है।

ऋणग्रस्तता और साहूकारी शोषण

प्रेमचंद के किसान जीवन में ऋण एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में सामने आता है। किसान अक्सर कृषि, पशु, विवाह, सामाजिक संस्कार या आकस्मिक संकट के लिए ऋण लेता है। लेकिन कमजोर आर्थिक स्थिति के कारण वह ऋण को समय पर चुका नहीं पाता और ब्याज तथा अन्य आर्थिक दायित्वों के कारण उसका संकट बढ़ता जाता है। गोदान में यह

स्थिति होरी के जीवन के माध्यम से दिखाई देती है। किसान अपनी मूल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण लेता है, लेकिन ऋण चुकाने के लिए फिर आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। इस प्रकार ऋण एक चक्र का रूप ले लेता है। IGNOU के अध्ययन में भी प्रेमचंद द्वारा किसान के एक बार ऋण लेने के बाद लंबे समय तक उसके बोझ को ढोने की विवशता को रेखांकित किया गया है।

जमींदारी व्यवस्था और किसान का शोषण

प्रेमचंद के ग्रामीण समाज में जमींदारी व्यवस्था आर्थिक शक्ति का महत्वपूर्ण केंद्र है। किसान भूमि पर श्रम करता है, लेकिन भूमि-संबंधी अधिकार और आर्थिक शक्ति उसके हाथ में पूरी तरह नहीं होती। जमींदार के प्रति लगान और अन्य दायित्व किसान को आर्थिक रूप से निर्भर बनाए रखते हैं। गोदान में यह संबंध विशेष रूप से स्पष्ट दिखाई देता है। होरी जैसे किसान के लिए भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं बल्कि जीवन की प्रतिष्ठा है, इसलिए वह प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जमीन से अपना संबंध बनाए रखना चाहता है। परंतु आर्थिक दबाव धीरे-धीरे उसे कमजोर करता है। 2017 की अध्ययन सामग्री में भी जमींदारी व्यवस्था और बदलती आर्थिक संरचना के संदर्भ में किसान के भूमि से विस्थापन की प्रक्रिया पर विशेष ध्यान दिया गया है।

सामाजिक रूढ़ियाँ और किसान जीवन

प्रेमचंद ने ग्रामीण गरीबी को केवल आर्थिक समस्या के रूप में नहीं देखा। ग्रामीण समाज में जाति, बिरादरी, धार्मिक विश्वास और सामाजिक प्रतिष्ठा भी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। किसान आर्थिक रूप से कमजोर होने के बावजूद सामाजिक मर्यादा बनाए रखने के लिए अनेक ऐसे खर्च करता है जिन्हें वह आर्थिक रूप से वहन नहीं कर सकता। गोदान में होरी की सामाजिक प्रतिष्ठा और बिरादरी के दबाव की समस्या इसके उदाहरण हैं। बिरादरी द्वारा लगाया गया दंड उसकी आर्थिक स्थिति को और कमजोर करता है। इस प्रकार प्रेमचंद दिखाते हैं कि सामाजिक व्यवस्था भी गरीब किसान की आर्थिक कठिनाइयों को बढ़ा सकती है। गोदान के अध्ययन में किसान के शोषण के साथ जाति-आधारित सामाजिक दबाव को भी महत्वपूर्ण समस्या के रूप में रेखांकित किया गया है।

किसान परिवार और ग्रामीण स्त्री

प्रेमचंद के ग्रामीण जीवन चित्रण में किसान परिवार की स्त्री भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गोदान की धनिया केवल होरी की पत्नी नहीं बल्कि परिवार के संघर्ष की सक्रिय सहभागी है। वह गरीबी, सामाजिक दबाव और पारिवारिक संकटों के बीच परिवार को संभालने का प्रयास करती है। धनिया के चरित्र के माध्यम से प्रेमचंद ग्रामीण स्त्री की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को भी सामने लाते हैं। IGNOU की 2017 की सामग्री में गोदान की किसान स्त्रियों के संदर्भ में

धनिया, झुनिया, सिलिया, नोहरी और अन्य महिला पात्रों को ग्रामीण सामाजिक संरचना से जोड़कर देखा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद के यहाँ किसान जीवन केवल पुरुष किसान का जीवन नहीं है, बल्कि पूरा परिवार उसकी आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है।

‘प्रेमाश्रम’ और किसान समस्या

प्रेमाश्रम में भी किसान और भूमि-संबंधी प्रश्न महत्वपूर्ण रूप से सामने आते हैं। इसमें ग्रामीण समाज, जमींदार-किसान संबंध और किसान असंतोष को सामाजिक संदर्भ में देखा जा सकता है। प्रेमचंद ने किसान की समस्याओं को व्यक्तिगत दुर्भाग्य के रूप में सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें भूमि-संबंधों और व्यापक सामाजिक व्यवस्था से जोड़ा। उनके उपन्यासों में किसान धीरे-धीरे अपनी स्थिति के प्रति जागरूक होता हुआ भी दिखाई देता है। इस प्रकार प्रेमाश्रम को प्रेमचंद की किसान-केंद्रित सामाजिक दृष्टि के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। IGNOU के प्रेमचंद अध्ययन में प्रेमाश्रम के संदर्भ में भूमि-संबंध, किसान आंदोलन और प्रेमचंद की दृष्टि पर स्वतंत्र अध्ययन-इकाई उपलब्ध है।

‘रंगभूमि’ और आर्थिक-सामाजिक संघर्ष

रंगभूमि में किसान जीवन का प्रश्न औद्योगिकीकरण, भूमि और आर्थिक शक्ति के संघर्ष से जुड़ा है। प्रेमचंद ग्रामीण समाज पर बदलती आर्थिक शक्तियों के प्रभाव को प्रस्तुत करते हैं। भूमि केवल किसान की आजीविका नहीं बल्कि उसके अस्तित्व और सामाजिक पहचान से जुड़ी होती है। जब आर्थिक शक्तियाँ भूमि पर अधिकार स्थापित करने का प्रयास करती हैं, तो संघर्ष उत्पन्न होता है। इस उपन्यास में सूरदास जैसे पात्र के माध्यम से भूमि, अधिकार, कमजोर वर्ग और शक्तिशाली आर्थिक हितों के बीच तनाव को अभिव्यक्ति मिलती है। प्रेमचंद के उपन्यासों पर IGNOU के अध्ययनक्रम में रंगभूमि को औद्योगिकीकरण की समस्या तथा मानवीय संघर्ष के संदर्भ में स्वतंत्र रूप से शामिल किया गया है।

शोषण के विभिन्न रूप

प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान का शोषण किसी एक व्यक्ति या संस्था द्वारा नहीं होता। यह अनेक सामाजिक और आर्थिक शक्तियों से मिलकर बनने वाली प्रक्रिया है। जमींदार, साहूकार, अधिकारी, पटवारी, पुरोहित और सामाजिक संस्थाएँ अलग-अलग स्तरों पर किसान के जीवन को प्रभावित करती हैं। किसान की निर्भरता जितनी अधिक होती जाती है, उसकी स्वतंत्रता उतनी ही कम होती जाती है। गोदान में होरी की स्थिति इसी बहुस्तरीय शोषण को स्पष्ट करती है। IGNOU के अध्ययन में भी महाजन, पुरोहित, अधिकारी और पुलिस आदि द्वारा किसानों के शोषण का उल्लेख किया

गया है। इस प्रकार प्रेमचंद के साहित्य में शोषण व्यक्तिगत लालच की घटना नहीं बल्कि सामाजिक संरचना से जुड़ी हुई प्रक्रिया बन जाता है।

किसान की मानसिकता और सामाजिक मर्यादा

प्रेमचंद का किसान केवल आर्थिक रूप से गरीब व्यक्ति नहीं है। उसके भीतर आत्मसम्मान, परिवार, धर्म, परंपरा और सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति गहरी भावना होती है। होरी बार-बार अपनी आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद सामाजिक मर्यादा बनाए रखने का प्रयास करता है। यही उसकी शक्ति भी है और उसकी कमजोरी भी। सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने की इच्छा उसे ऐसे निर्णय लेने के लिए बाध्य करती है जिनसे उसका आर्थिक संकट बढ़ता है। प्रेमचंद इस मानसिकता की आलोचना करते हुए भी किसान के प्रति संवेदनशील बने रहते हैं। वे किसान की परिस्थितियों को समझते हैं और उसके व्यवहार को उसके सामाजिक परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं।

प्रेमचंद का यथार्थवाद

प्रेमचंद का यथार्थवाद उनके किसान जीवन चित्रण की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को न तो पूरी तरह आदर्श बनाया और न ही केवल दुख और निराशा का चित्र प्रस्तुत किया। उनके ग्रामीण पात्रों में संघर्ष, आशा, भय, विश्वास, स्वार्थ, त्याग और प्रतिरोध सभी दिखाई देते हैं। इसी कारण उनके किसान पात्र जीवंत और विश्वसनीय बनते हैं। गोदान के संबंध में IGNOU की सामग्री इसे प्रेमचंद के जीवन-भर के रचनात्मक प्रयासों का महत्वपूर्ण निष्कर्ष मानती है और होरी के संघर्ष के माध्यम से भारतीय किसान की त्रासदी को रेखांकित करती है। प्रेमचंद का यथार्थवाद सामाजिक समस्याओं को केवल दिखाता नहीं, बल्कि पाठक को उनके कारणों और प्रभावों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान जीवन, ग्रामीण गरीबी और शोषण का चित्रण भारतीय ग्रामीण समाज की जटिल वास्तविकताओं को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रेमाश्रम, रंगभूमि और विशेष रूप से गोदान में किसान को आर्थिक व्यवस्था, भूमि-संबंधों, ऋण, जमींदारी, साहूकारी, सामाजिक रूढ़ियों और जातिगत दबावों के बीच संघर्ष करते हुए प्रस्तुत किया गया है। होरी का जीवन इस बात को स्पष्ट करता है कि किसान की गरीबी केवल व्यक्तिगत कमजोरी का परिणाम नहीं, बल्कि अनेक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के सम्मिलित प्रभाव से उत्पन्न होती है। धनिया और अन्य ग्रामीण स्त्री पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने यह भी दिखाया कि किसान परिवार की स्त्रियाँ आर्थिक संकट और सामाजिक दबाव का समान रूप से सामना करती हैं।

संदर्भ सूची

1. अंजू. (2017). 'गोदान' में नारी-चरित्र. नई दिल्ली।
2. संजय यादव. (2017). किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान. नई दिल्ली।
3. प्रेमचंद. (2017). हिन्दी उपन्यास-1: प्रेमचंद का विशेष अध्ययन. नई दिल्ली।
4. पल्लव. (2021). 'ईदगाह' कहानी का विश्लेषण एवं मूल्यांकन. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
5. रामबक्ष. (2021). प्रेमचंद का परिचय और उनके उपन्यास. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।